Conclusion

उपसंहार

भारतीय शास्त्रीय संगीत आज संक्रमण के दौर से गुज़र रहा है। आज की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों तथा वातावरण का प्रभाव शास्त्रीय संगीत पर भी पड़ रहा है। जिससे संगीत कला का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। पर देखते हुए विद्वज्जनों का मानना है कि यदि कुछ दिनों यही स्थिति रही तो शास्त्रीय संगीत कला का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। शास्त्रीय संगीत के सम्मुख आज जो परिस्थितियाँ उत्पन्न हैं उन परिस्थितियों के मूल में संगीत जगत में उत्पन्न कुछ समस्यायें हैं। यदि इन समस्याओं का निराकरण हो जाय तो संगीत कला का स्तर अवश्य ऊँचा उठेगा तथा भविष्य फिर उज्जवल होगा।

संगीत आदिकाल से ही जन जीवन के आत्मिक उल्लास, सुखानुभूतियों तथा दुखानुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। विश्व की विभिन्न मानव जातियों की अनेक धर्म-विविधतायें होते हुये भी पूजा-अर्चना और भक्ति-साधना का माध्यम गायन संकीर्तन; एकता, सार्वभौमिक सर्वकालीन, आत्मीयता तथा बंधुत्व का प्रतीक है। मानव जीवन के हर पहलू में संगीत की ध्वनि रही है। प्राचीन काल में जिन ऋचाओं को पढ़ा जाता था तब से आज तक संगीत में जो अंतर आया है वह एक बड़े गौरव की बात है। मानव को संगीत निसर्ग की देन है। जैसे-जैसे हमारी सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ वैसे-वैसे संगीत कला भी विकसित होती गयी।

भारतीय संगीत कला एक अभिजात्य कला है और हमारी सांस्कृतिक धरोहर है जिसे कई सौ वर्षों से हमारे पूर्वज संजोते चले आ रहे हैं; शिक्षा की गुरु-शिष्य परंपरा द्वारा। इतिहास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि हमारी इस धरोहर को एक बार मुगल शासन व्यवस्था के स्थापित होने और उसके अंत व अंग्रेजी शासकों के काल में आज की तरह संक्रमण और समस्याओं का सामना करना

पड़ा था। उस वक्त इस अरि-थरता के पीछे दोष यह था कि यह कला केवल राजदरबारों की सम्पत्ति बनकर रह गयी थी और कुछ गिने-चुने व्यक्ति इसे अपने अधिकार की वस्तु मान बैठे थे; साधारण जन से इसका नाता समाप्त सा ही हो गया था। इन कुछ लोगों ने कला पर अपना प्रभुत्व जमाये रखने के लिये इसे विचित्रता तथा शृंगारिकता का जामा पहना दिया था कि साधारण जन इसे अपने लिये अद्भुत कला समझने लगे थे। जो कुछ थोड़े लोग यदि इस ओर आकर्षित होते भी थे तो संगीत कला के इन ठेकेदारों ने इस कला की शिक्षा को इतना दुर्लभ बना दिया था कि इन कठिनाइयों को देखकर ही वे पलायन कर जायें। इस प्रकार का वातावरण बनते-बनते उस वक्त भी यही स्थिति उत्पन्न हो गयी थी कि कुछ समय बाद यह कला समाप्त हो जायेगी।

इस कला का उस अंधकारमय युग से उद्धार करने के लिये विष्णुद्वय का अवतार हुआ। उन्होंने अपनी वैचारिकता के आधार पर अपने भगीरथ प्रयासों द्वारा इस कला को नवजीवन प्रदान किया; आज उनके प्रयासों के फल-स्वरूप ही यह कला सर्वजन के लिये सुलभ हो सकी है। आज इस कला की शिक्षा इसके अनगिनत केन्द्र अपनी-अपनी तरह से प्रदान कर रहे हैं। परंतु आज से ४०-६० साल पहले उन्होंने जो ढाँचा खड़ा कर दिया, जो मार्ग दिखा दिया उसी पर हम चल रहे हैं। उस ढाँचे की सुदृढ़ता के लिये हमने आगे कुछ नहीं किया। समय के अनुसार परिस्थितियाँ बदलती हैं और उनके अनुसार परिवर्तन करना आवश्यक है इस तथ्य पर विचार ही नहीं किया गया जिसके परिणामस्वरूप संगीत कला आज फिर अनेक समस्याओं से घिर गयी है। आज इसका प्रसार पहले से बहुत अधिक हो गया है। पर फैलाव की ओर ध्यान देते हुये उसकी गहराई भी बनी रहे इसका ध्यान ही नहीं रखा गया। इससे जुड़ी समस्याओं पर कोई विचार ही नहीं हो रहे हैं; उन पर किसी प्रकार के सुधारात्मक उपायों

के लिये प्रयत्न भी नहीं हो रहे हैं। यही कारण है कि आज फिर हमारी संगीत कला अनेक समस्याओं से जूझते हुये जीवित रहने का प्रयत्न कर रही है।

सर्वप्रथम तो इस कला की शिक्षा पद्धति में ही अनेक दोष उत्पन्न हो गये हैं। संगीत शिक्षा विद्यालय के प्रारंभिक स्तर से आरंभ नहीं की जाती है। केवल विश्वविद्यालय स्तर से संगीत शिक्षा आरंभ होती है अतः स्नातक स्तर से छात्र संगीत का 'क ख ग' आरंभ करता है तब उपस्नातक होने के बाद विद्यार्थी के कलाकार बनने की अपेक्षा करना ही गलत है। हमारी संगीत शिक्षा नींव यहीं से लड़खड़ाना आरंभ करती है। विद्यार्थियों का चयन प्रवेश परीक्षा द्वारा नहीं किया जाता इससे प्रतिभाहीन व कमज़ोर विद्यार्थियों के साथ अच्छे विद्यार्थियों का भी नुक्सान होता है। पाठ्यक्रम भी अनेक दोषों से परिपूर्ण है जैसे प्रतिवर्ष के लिये राग संख्या की अधिकता, व्यावसायिक दृष्टि से विद्यार्थी को सक्षम न बनाने का दोष भी पाठ्यक्रम में है। संगीत विषय की तुलना अन्य विषयों से करके उनके अनुरूप ही संगीत शिक्षा की व्यवस्था की गयी है जो कि अनुचित है। संगीत-शिक्षा के लिये निर्धारित समय भी काफी कम है। शिक्षा-पद्धति का दोषपूर्ण होना परीक्षा-पद्धति को भी दोषपूर्ण बनाता है। इन दोषों के रहते आज संस्थागत-शिक्षा-पद्धति केवल डिग्री बाँटने की मशीन बन गयी है। अतः आज संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इन समस्याओं से संबंधित प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार करके उन पर लिये प्राध्यापकों तथा छात्रों के मतों के आधार पर भी यही निष्कर्ष निकलते हैं कि संगीत शिक्षा विद्यालय के प्रारंभिक स्तर से उच्च स्तर तक चलनी चाहिये, छात्रों को प्रवेश योग्यता के आधार पर दिया जाय, पाठ्यक्रम में उचित दिशा में परिवर्तन करते हुये उसे जीविकोपार्जन की समस्या से मुक्त करना होगा। संगीत शिक्षा के लिये उपयुक्त स्थान, संगीत वाद्यों, संगीत-शिक्षकों आदि की व्यवस्था करनी होगी

परीक्षा पद्धति में कठोरता लानी होगी। एक स्तर के बाद प्रतिभाशाली छात्रों की शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति द्वारा करनी आवश्यक है। संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में संस्थागत-शिक्षा-पद्धति तथा गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति के गुणों के समन्वय की तीव्र आवश्यकता है। तब कोई कारण नहीं होगा कि संस्थागत-शिक्षा-संस्थायें भी कलाकारों की जन्मभूमि बन सकेंगी तथा संगीत कला का स्तर भी ऊँचा उठेगा। संगीत-शिक्षा-पद्धति में सुधार से इस क्षेत्र की अनेक समस्याओं का अंत स्वतः ही हो जायेगा संगीत कला की उचित शिक्षा की व्यवस्था होने पर साधना के अभाव की समस्या का स्वतः ही अंत हो जायेगा। संगीत कला में साधना की आवश्यकता का महत्व तब विद्यार्थियों को उचित वातावरण के परिप्रेक्ष्य में स्वतः ही समझने लगेगा। क्योंकि शिक्षा की व्यवस्था में सुधार होने के साथ ही संगीत कला की साधना का एक वातावरण बनेगा। संगीत कला को जीवित तभी मिलेगी जब कला की साधना उचित रीति से समपन्न होगी।

जीविकोपार्जन की समस्या भी इस कला की राह की एक बड़ी बाधा है। पहले इस कला के साधकों को राज्याश्रय या गुरु का आश्रय मिल जाता था पर वर्तमान युग में यह परंपरा समाप्त हो गई है। और इस कला के क्षेत्र में कोई खास जीविकोपार्जन के अवसर दिखाई नहीं पड़ते हैं। इससे भी इस कला के प्रति उदासीनता का होना स्वाभाविक है यदि उदासीनता न भी हो तो जीविकोपार्जन के अन्य साधन को अपनाकर इसकी साधना करना अवश्य दुष्कर कार्य है। शिक्षा व्यवस्था में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था द्वारा संगीत जगत की इस समस्या द्वारा भी एक सीमा तक छुटकारा पाया जा सकता है।

फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत के प्रयोग द्वारा शास्त्रीय संगीत के प्रति साधारण जन की लोकप्रियता में वृद्धि के साथ ही फिल्म संगीत भी मधुरिमा से युक्त हो

अधिक लोकप्रियता प्राप्त करेगा साथ ही फिल्म उद्योग संगीत-साधकों के लिये जीविकोपार्जन के नये आयाम भी खोल सकता है। फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत के प्रयोग से शास्त्रीय संगीत कला को लाभ ही होगा।

शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार के लिये कलाकार को उसकी प्रस्तुतिकरण कला पर भी विशेष ध्यान देना होगा कारण प्रस्तुतिकरण का प्रभाव सीधे जनता पर पड़ेगा। कलाकार को इसके लिये अपने कला प्रदर्शन को सरस बनाना होगा। कलाकार को इसके लिये प्रदर्शन की समय-सीमा, राग-चयन, बंदिश-चयन, तथा प्रदर्शन में कला-पक्ष तथा भाव-पक्ष के उचित समन्वय, संतुलित साथ-संगत आदि तथ्यों पर ध्यान देकर प्रदर्शन को अधिक से अधिक प्रभावी बनाना होगा। इस प्रकार किया गया कला का प्रस्तुतिकरण कला के गुणात्मक स्तर में सुधार के साथ-साथ कलाकार को भी उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाला होगा।

इसके बाद शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार के लिये संगीत का विशेषकर शास्त्रीय संगीत का प्रसारण करने वाले प्रचार माध्यमों आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि का उचित प्रयोग की आवश्यकता है। इन प्रचार माध्यमों का प्रयोग इस प्रकार हो कि सभी प्रतिभाओं को इन पर अवसर अपने स्तर के अनुरूप मिले। तथा ये माध्यम अपने स्तर को प्रत्येक कलाकार वर्ग के अनुरूप बनाये रखें।

फिर शास्त्रीय संगीत में गुणात्मक सुधार के लिये कलाकारों को संरक्षण भी प्रदान किया जाय। इसके लिये कला साधना में लगे कलाकारों को विशेष रूप से संरक्षण व सुविधायें दी जायें ताकि वे आगे बढ़ सकें कला-साधना निश्चिन्त होकर कर सकें। प्रस्थापित कलाकारों के समक्ष अनेक अवसर स्वयं ही होते हैं पर उदीयमान कलाकारों को ऐसे अवसर प्रदान किये जायें कि वे आगे आ सकें। फिर कलाकारों को वृद्धावस्था में आवश्यकता पड़ने पर पूर्ण संरक्षण प्रदान किया

जाय। इन सुविधाओं के प्राप्त होने के बाद कलाकार की भी शास्त्रीय संगीत कला के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करना नैतिक कर्तव्य हो जायेगा। इन सुधारात्मक उपायों को अपनाने के बाद कोई कारण शेष नहीं रहेगा कि हमारे शास्त्रीय संगीत का भविष्य उज्वल न हो। अस्तु संगीत (शास्त्रीय) कला के स्तर को ऊँचा उठाने के लिये संगीत-शिक्षण की समस्याओं तथा संगीत-जगत की अन्य समस्याओं के प्रति सरकार तथा समाज को समय रहते सचेत हो जाना चाहिये और समस्याओं के सम्भावित समाधान निकालकर इन समस्याओं का निवारण किया जाना चाहिये।